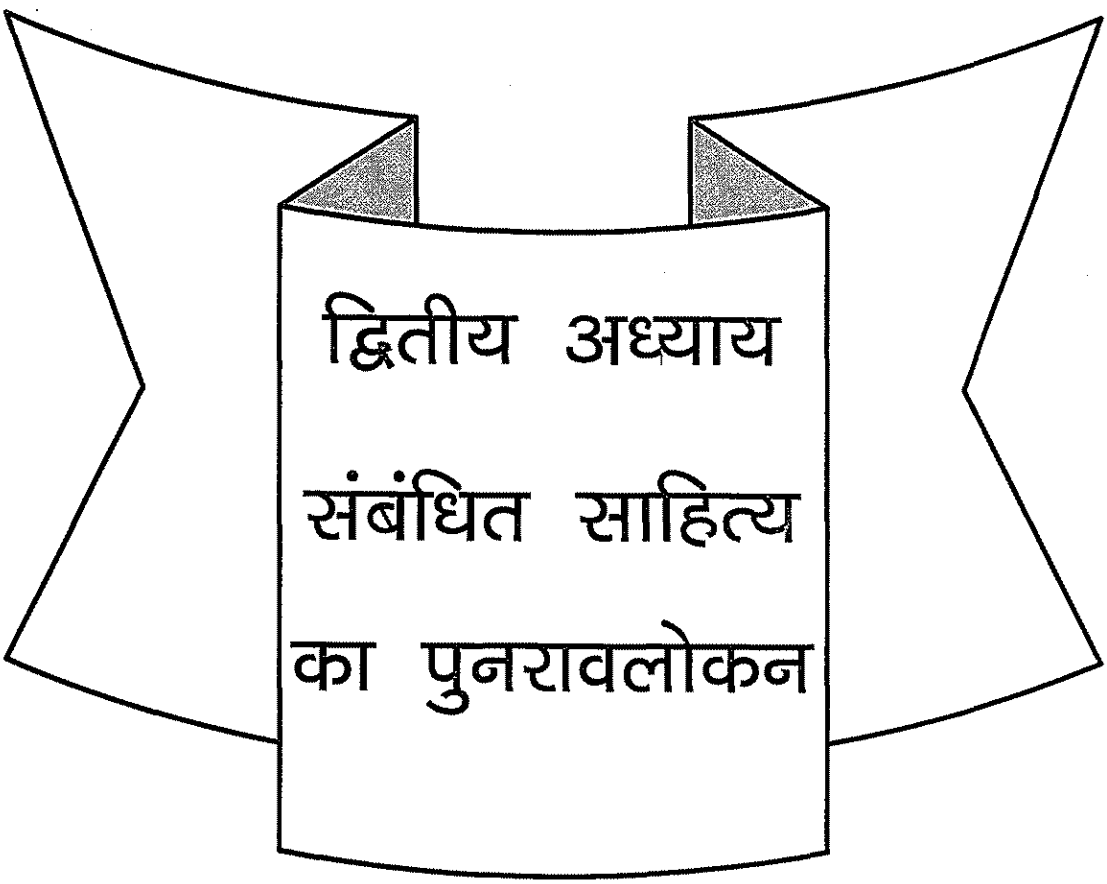
द्वितीय अध्याय
संबंधित साहित्य
का पुनरावलोकन

अध्याय–2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

किसी भी कार्य को करने से पूर्व यह आवश्यक है कि शोधकर्ता को शोध से संबंधित जानकारी हो जिसे कि वह जिस विषय पर शोधकार्य करने जा रहा है उससे संबंधित शोधकार्य से भली–भाति परिचित हो सके। इसके लिए उसे शोध संबंधी अन्य शोध कार्यों के संदर्भ ग्रन्थों का भली–भाती अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। संबंधित साहित्य के अध्यापन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने जैसा होगा। इसके अभाव में सही दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ सकता। जब तक उसे पता न हो कि उस क्षेत्र में कितने कार्य हो चुके है, किस विधि से काम किया गया है, तथा उसके क्या निष्कर्ष प्राप्त हुए है, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है।

डब्ल्यू.आर. बोर्ग (1965) लिखते है "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशीला के समान है जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता है यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नीव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन व महत्वहीन होने की संभावना है।"

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संबंधित साहित्य के द्वारा किसी भी अध्ययन से संबंधित समस्त साहित्य उपलब्ध किया जा सकता है कि किस क्षेत्र में कितना कार्य किस रूप में हो चुका है। लोगों ने क्या परिकल्पनाएँ की थी? किस विधि से आंकड़ो का संग्रह व सारणीयन व विश्लेषण करके क्या परिणाम निकाले? इसका निर्णय बड़ा ही महत्वपूर्ण है तथा अनुसंधान कार्य की वास्तविक पूर्णता में मदद् करता है।

शोधकर्ता ने उपयुक्त विचारों को ध्यान में रखते हुए शोधकार्य की समीक्षा की ताकि प्रस्तुत अध्ययन के नियोजन एवं महत्वपूर्ण पदों के निर्धारण में सहायता मिल सके।

2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

- पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतर दृष्टि प्राप्त हो सकती है।
- ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
- सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अच्छे प्रकार से किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।

- ❖ संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।
- ❖ पूर्व अनुसंधानो के अध्ययन से संबंधित नवीन समस्याओं का पता चलता है।
- ❖ सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानो का नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

अतः इसके महत्व को स्पष्ट करने हेतु निम्न लिखित परिभाषा दी है।

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है, कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी संबंधी आवश्यकता खोजों से परिचित होता है। उसी प्रकार शिक्षा में कार्य करने वाले तथा अनुसंधान के लिए भी उस क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।"

2.3 संबंधित साहित्य का पुनरावनलोकन

(1) आफताब जाकिरा सिद्दीकीने प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको एवं शिक्षिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

उद्देश्यः–वर्तमान समस्या के अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मूल्यों आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सैद्धान्तिक मूल्य, सौदंर्यात्मक मूल्य, धार्मिक मूल्य एवं राजनीतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना था।

निष्कर्षः–

(1) आर्थिक मूल्योंके आधार पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत है। आर्थिक मूल्यों का विकास औसत स्तर का है।

(2) सामाजिक मूल्यों के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत है। दोनों में सामाजिक मूल्यों का विकास सामान्य स्तर से उच्च स्तर का है।

(3) सैद्धान्तिक मूल्यों के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है, अतः परिकल्पना स्वीकृत है। शिक्षक तथा शिक्षिकाओं में सैद्धान्तिक मूल्यों का विकास औसत से उच्च स्तर का है।

(4) सौन्दर्यात्मक मूल्यों के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है, अतः परिकल्पना स्वीकृत है। सौन्दर्यात्मक मूल्यों में शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के मूल्यों का विकास औसत से उच्च स्तर का है।

(5) शिक्षिकाओं में धार्मिक मूल्य शिक्षकों की अपेक्षा उच्च स्तर का है।

(6) राजनैतिक मूल्य के आधार पर सार्थक अंतर है, अतः परिकल्पना अस्वीकृत है। इस मूल्य का विकास औसत स्तर का है।

(2)गुप्ता आर. आर. (1987) ने अवद्य विश्वविद्यालय के बी.एड के प्रशिणार्थियों के मूल्यों का अध्ययन किया।

उद्देश्यः–उपरोक्त शोधकार्य का मुख्य उदेश्य छात्र शिक्षकों द्वारा पालन किये जानेवाले मूल्यों की खोज करना था। न्यायदर्श के रूप में अमेटी के 130 छात्र शिक्षको को चुना गया जिस में 90 ग्रामीण40 शहरी छात्र शिक्षक थे। आलपोर्ट बर्नान लिण्डजे के मूल्य मापनी में हिन्दी मूल्य मापनी का उपयोग किया गया मध्यमान मानक विचलन को निकाला गया।

निष्कर्षः–शहरी छात्र शिक्षको की तुलना में ग्रामीण शिक्षको में धार्मिक मूल्य उच्च स्तर पर पाये गये। जबकि शहरी छात्र शिक्षको में ग्रामीण छात्र शिक्षको की तुलना में धार्मिक मूल्य निम्न स्तर पर पाये गये। जबकि शहरी छात्र शिक्षको में ग्रामीण छात्र शिक्षको की तुलना में राजनैतिक आर्थिक मूल्य उच्च थे सौन्दर्यात्मक और पुरूष शिक्षको में अधिक पाये गये।

(3)कुमार,ए.(1991) ने प्रशिक्षणार्थी के मूल्यों का अध्ययन किया है। इसमें छात्र शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों के अध्ययन का उल्लेख किया गया है।

उद्देश्यः–इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रारंभिक और हायर सेकेण्डरी महिला व पुरूष छात्र शिक्षक प्राशिक्षणार्थियों के मूल्यो की तुलना करना था।

निष्कर्षः–प्राथमिक विद्यालय के छात्र शिक्षक अधिक धार्मिक एंव भगवान से डरते थे तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यो की अधिक महत्व देते थे। जबकि हायर सेकेण्डरी के शिक्षक विशिष्ट ज्ञान रखते थे तथा परिवार के सम्मान के बारे में ज्यादा विचार करते थे। प्राथमिक विद्यालय की महिला प्रशिक्षणार्थी बहुत कम खर्चीली थी जबकि सेकण्डरी विद्यालय की महिला छात्र शिक्षक प्रशिक्षणार्थी बहुत अधिक सामाजिक थी। दूसरे मूल्यो में अंतर उपरोक्त मूल्यों की तुलना में सांख्यिकी रूप से विशिष्ट नहीं था।

(4)मीनाक्षी मिश्रा ने विघार्थियों के मूल्यों के विकास में विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन

उद्देश्यः–

- विद्यार्थियों के मूल्यों के विकास में हिन्दीं माध्यम विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के मूल्यों के विकास में अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के मूल्यों के विकास में सरकारी विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के मूल्यों के विकास में गैरसरकारी विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

- हिन्दी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों में उच्च स्तर के मूल्य पाये जाते है। क्योकि हिन्दी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों को विकसित करने के लिए उचित वातावरण उपलब्ध करवाते है।
- अग्रेजी माध्यम विद्यालयों में विद्यार्थियों में सामन्य स्तर के मूल्य पाये जाते है, क्योकि अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति की और आकर्षित होते है, इस लिए उनमें मूल्यों का विकास उचित तरीके से नहीं हो पाता है।
- सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामान्य स्तर के मूल्य पाये जाते हैं। क्योकि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को मूल्यों का विकास करने में विशेष ध्यान नहीं दे पाते है।
- गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में उच्च स्तर के मूल्य पाये जाते है। क्योकि नीजी विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के मूल्यों का विकास करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है।

(5)शर्मा यादवेन्द्र कुमार तथा नरेश कुमार (1993) ने शिक्षक कौशल के सह संबंधो के अध्ययन से यह पाया कि शिक्षकों के लिए वे कौशल अपेक्षा कृत अधिक महत्वपूर्ण है जिनसे अध्ययन में छात्रो की

अधिकाधिक भागीदारी अपेक्षित की जाए। जिससे शिक्षण प्रक्रिया तथा अधिगम प्रक्रिया अधिक गतिशील एंव सहायक होती है। इस प्रकार छात्रों की शिक्षण में अधिक भागीदारी दृश्य–श्रृव्य सामग्री का उपयोग तथा प्रश्नोतर प्रणाली शिक्षण कौशल के विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

(6)सविता तिवारी (1995) ने व्यक्तित्व विशेषकों एंव सूक्ष्म शिक्षण कौशल के संबंध का अध्ययन शीषर्क से लघुशोध किया गया है।

उद्देश्यः–व्यक्तित्व के विशेषकों का प्रभाव सूक्ष्म शिक्षण कौशलों पर पड़ता है या नहीं यह जानना था।

निष्कर्षः–जिन छात्राध्यापिकाओं में उत्साही, मिलनसार, खुशमिजाज, सरलता, आत्म युराग्रही, हठधर्मी, दानी, दयालु, पक्षपातहीन, स्वतंत्र, आत्मसंतुष्टता, स्वयं के निर्णय पर विश्वास के गुण पाया गया, उनमें खोजपूर्ण प्रश्न कौशल का विकास ज्यादा पाया गया। जिन छात्राध्यापिकाओं में स्वयं पर विश्वास रखना, शांत, प्रसन्नचित्त, गम्भीर, निश्चिन्त, सुरक्षित, निर्मल, संतुष्टता के गुण पाये गये, उनमें व्याख्यान कौशल का विकास ज्यादा पाया गया, जिन छात्राध्यापिकाओं में भावुकता, परिवर्तनशीलता, संवेगात्मकता, रुचियों व दृष्टिकोण में परिवर्तन के गुण पाये गये। उनमें उद्दीपन–परिवर्तन कौशल का विकास ज्यादा पाया गया।

(7)सेवाश्रम वशिष्ट (1997)ने एक प्रोजेकट इण्टरनेशनल एज्यूकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग प्रोगाम में मूल्य संबंधित अध्ययन किया था।

इस प्रोगाम में अध्यापकों व विद्यालयी शिक्षा में मूल्यों को बढावा देने के लिए आष्ठांग योग पर आधारित एक नयी विधि तैयार की गई इस विधि के प्रयोग से निम्न परिणाम प्राप्त हुये।

निष्कर्षः–मूल्य संबंधित क्षेत्रो में एक सार्थक विकास देखा गया। इसे प्रयोग में लाने से बालकों में मूल्यों के प्रति जागरुकता व ज्ञानात्मक अभिवृत्तियों का विकास देखा गया। निम्न उपलब्धिवाले बालकों के प्रतिशत में गिरावट आयी व मध्यम उपलब्धिवाले बालकों उच्च उपलब्धिवाले बालको में बदल गये।

9 – 411

(8)शिल्पा धोडासरा(2006–2007)ने कक्षा सात के विद्यार्थियों का हिन्दी भाषा कौशलों का अध्ययन शीर्षक से लधुशोध किया।

उद्देश्यः–उपरोक्त शोध का मुख्य उद्देश्य छात्र एंव छात्राओ में हिन्दी भाषा के कौशलों का अध्ययन करना था।

निष्कर्षः–वाचन का मुहावरा न होने के कारण तथा हिन्दी भाषा एंव शब्दों की ज्यादा पहचान न होने के कारण कई बच्चे पठन में कठिनाई का अनुभव करते है और वाचन में अशुद्धि कर बैठते है। जल्दबाजी,लापरवाही तथा नियमित लेखन न करने की आदत के कारण लेखन में कठिनाई अनुभव करते है। मातृभाषा का प्रभाव तथा विद्यार्थियों को हिन्दी का शुद्ध वर्तनी रूप व्याकरण के नियमों की जानकारी न होने के कारण पठन व लेखन कौशल में अशुद्धिया

हुई। अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों को शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में पठन तथा लेखन कौशल में ज्यादा कठिनाई हुई।

(9)डॉ. राजकुमारी परिहार ने राजस्थानी लोकगीतों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर जीवन मूल्य आधारित शिक्षण–एक अध्ययन

उद्देश्यः–लोकगीतों के माध्यम से जीवन मूल्यों की शिक्षा के अवसरों को जानना। उच्च प्रथमिक स्तर के लिए जीवन मूल्य शिक्षण का प्रारूप प्रस्तुत करना। लोकगीतों के माध्यम से जीवन मूल्यों के शिक्षण में आने वाली बाधाओं तथा उनके निवारण को जानना।

निष्कर्षः–शिक्षा के द्वारा ही राजस्थानी लोकगीतों की संस्कृति को हम लोकगीतों के द्वारा विद्यार्थियों को उनके समाज की कला एंव संस्कृति, विरासत आदि की शिक्षा प्रदान कर सकते है। लोकगीतों के द्वारा विद्यार्थियों को उनके समाज की कला, संस्कृति, विरासत आदि की शिक्षा प्रदान की जा सकती है। लोकगीतों की अभिव्यक्ति को विद्यार्थियों तक विषयवस्तु या पाठ्यक्रम में समाहित करने का प्रयास करना चाहिए।

(10)अमित कुमार एंव अर्चना अग्रवाल ने प्रभावी विद्यालय प्रबंधन हेड प्रधानाचार्य में अपेक्षित कौशल का अध्ययन किया था।

उद्देश्यः–प्रभावी विद्यालय प्रबंधन हेड प्रधानाचार्य में अपेक्षित कौशल का अध्ययन करना था।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education
पुस्तकालय
Library

निष्कर्षः– प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन एंव विवेचन से स्पष्ट है कि किसी भी विद्यालय का सम्पूर्ण उतरदायित्व उसके प्रमुख पर होता है। अर्थात प्रधानाचार्य ही वह केन्द्र बिन्दु है जिनके दिशा–निर्देशन में विद्यालय की सम्पूर्ण गतिविधियों के विधिवत संचालन एंव गुणवतापूर्ण संस्थागत निष्पादन को सुनिश्चित करने में प्रधानाचार्यो को कुछ प्रबंधन एंव मानवीय कौशलों में दक्ष होना अत्यन्त आवश्यक है।

(1 1)स्ववित पोषित अध्यापक संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण–अभिवृति आत्म प्रत्यय एवं जीवन मूल्यों पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रभाव

उद्देश्यः–

- स्ववित पोषित संस्थाओं के छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिवृति पर शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रशिक्षण पूर्व एवं प्रशिक्षण पश्चात स्थिति का अध्यायन करना।
- स्ववित पोषित संस्थाओं के छात्राध्यापकों के आत्म प्रत्यय पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रशिक्षण पूर्व एवं प्रशिक्षण पश्चात स्थिति का अध्यायन करना।
- स्ववित पोषित संस्थाओं के छात्राध्यापको के जीवन मूल्यों पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रशिक्षण पूर्व एवं प्रशिक्षण पश्चात् स्थिति का अध्ययन करना।

- बुद्धि, लिगं, आयु, अनुभव आदि चारों की दृष्टि से शिक्षणशील व्यक्तित्वों की शिक्षण अभिवृति, आत्म प्रत्यय एवं जीवन मूल्य आदि विशेषताओं के अन्तर का अध्ययन करना।
- छात्राध्यापकों की विशेषताओं पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव को जानने से सम्बन्धित अनु अध्ययन द्वारा शिक्षक प्रशिक्षकों के विचारों का अध्ययन करना।
- स्ववित पोषित संस्थाओं के अध्यापकों की शिक्षण अभिवृति, आत्मप्रत्यय एवं जीवन मूल्यों आदि विशेषताओं से सम्बन्धित विभिन्न चरों के सह–सम्बन्ध का अध्यायन करना।

निष्कर्ष

इस शोध से स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृति एवं आत्मप्रत्यय के मध्य उच्च धनात्मक सम्बन्ध दृष्टिगत हुआ है। इसका अभिप्राय यह है कि प्रशिक्षण पूर्व की तुलना में प्रशिक्षण पश्चात की स्थिति में प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव से स्ववित पोषित संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृति एवं आत्मप्रत्यय में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही प्रशिक्षणार्थियों के जीवन मूल्यों से सम्बन्धित मध्यमान एवं मानक विचलनों की जाँच करने के पर ज्ञात होता है कि प्रशिक्षण के प्रभाव से ज्ञानात्मक एवं देश भक्ति जैसे मूल्यों की तुलना में सामाजिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, स्वास्थ्य, भक्ति सामर्थ्य एवं धार्मिक मूल्यों में अधिक वृद्धि हुई है।

साहित्य का अवलोकन शोध से कैसे संबंधित हैः-

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन करने से ज्ञात होता है, कि मूल्यों तथा कौशलों का विकास करने में विद्यालय कि विभिन्न प्रकार कि गतिविधियों का योगदान महत्वपूर्ण होता है। विद्यालय कि विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रार्थना सभा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विभिन्न दिनों को मनाना, वक्ताओं के वक्तय को सुनना, प्रवचन प्रस्तुत करना आदि के द्वारा विद्यार्थियों में मूल्यों तथा कौशलों का विकास होता है।

विद्यालय में प्रार्थना सभा का अपना अलगही महत्व देखने को मिलता है। प्रार्थना सभा मेंविभिन्न प्रकार कि गतिविधि जैसे प्रार्थनागान, प्रार्थना प्रवचन, वक्ताओं के प्रवचन, विभिन्न धर्म कि प्रार्थना आदि से विद्यार्थियों में मूल्यों एवं कौशलयों का विकास होता है।